पढो और फैसला करो

शाएकर्दा:

आल इंडिया जमात रज़ा ए मुस्तफ़ा

इंदौर

अपील

येह किताब घर बैठे इन्तेहाई कम हदिये मे हासिल करें और खूब तकसीम करके लोगों का ईमान बचाएं। ईसके लिये वेबसाईट देखे www.ITSsunni.com

खुदा ऐसी कुव्वत दे मेरे क़लम में
के बद-मज़हबों को सुधारा करूं मैं
(हुज़ूर मुफ्तीए आज़म मौलाना शाह मोहम्मद मुस्तफा रज़ा क़ादरी नूरी बरेलवी रदिअल्लाहो तआला अन्हो)

पढ़ो और फैसला करो

* तीसरा एडीशन *
जमादिल उला 1435 हिजरी (Mar 2014)

शाएकर्दा: आल इंड़िया जमात रज़ा-ए-मुस्तफा
Mob. 09922070787 www.TTSsunni.com
हेड आफिसः ८२, सौदागरान, बरेली शरीफ, यू.पी.

*** अपील ***

येह किताब घर घर फैलाएं और दूसरे शहरों में मौजूद अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और दीगर तन्ज़ीमों को नमूने के तौर पर रवाना करें ताकि वह भी इसे बड़ी तादाद में तक़सीम करने का प्रोग्राम बना सकें। इस के इलावा शादी बियाह और चेहलुम के मौक़ा पर और नमाज़े जुमा के बाद मस्जिदों में तक़सीम करें।

* بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ *

येह जो तुझ को बुलाता है येह ठग है मार ही रख्खे गा
हाय मुसाफ़िर दम में न आना मत कैसी मतवाली है

हज़रत अबु सईद खुदरी रदिअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है, वह कहते है कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की खिदमत में हाज़िर थे और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम माले-ग़नीमत तक़सीम फरमा रहे थे, उसी वक़्त ज़ुलखवेसरा नाम का एक आदमी, जो क़बीला बनी तमीम का रहने वाला था, आया और कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! इन्साफ से काम लो! हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फरमाया: अफसोस तेरी जसारत (हिम्मत) पर ! मैं ही इन्साफ नहीं करूंगा तो और कौन इन्साफ करने वाला है? अगर मैं इन्साफ नहीं करता तो तू खाईब व खासिर (हलाक) हो चुका होता। हज़रत उमर रदिअल्लाहो तआला अन्हो से जब नहीं रहा गया तो उन्हों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे इजाज़त दीजियें, मैं इसकी गर्दन मार दूं। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फरमाया: इसे छोड़ दो, यह अकेला नहीं है। इसके बहुत से साथी हैं जिन की नमाज़ों और जिनके रोज़ों को देख कर तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर समझोगे। वह क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन कुरआन उन के हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है।

(मिश्कात शरीफ सफहा ५३५, बुखारी शरीफ जिल्द २, सफहा १०२२)

यही वाक़ेआ हज़रत शरीक इब्ने शहाब रदिअल्लाहो तआला अन्हो से भी रिवायत है। इस में उन्हों ने उस गुस्ताख शख्स के बारे मे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम का यह इर्शाद बयान किया है । यानी फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि: आखरी ज़माने में एक जमात निकलेगी, गोया यह शख्स उस जमात का एक आदमी है। कुरआन

पढ़ेंगे लेकिन क़ुरआन उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। वह इस्लाम से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से। उन की खास पहेचान सर मुंडाना है। वह हमेशा जमात दर जमात निकलते रहेंगे यहाँ तक कि उन्का आखरी दस्ता (ग्रुप) मसीह दज्जाल के साथ निकलेगा। जब तुम उनसे मिलोगे तो उन्हें अपनी तबीयत व खसलत के लेहाज़ से बदतरीन (बहोत खराब) पाओग। (मिश्कात शरीफ, स.३०९)

बुखारी शरीफ में एक हदीस लिखी है जिसे बयान करने से पहेले उसके रावी हज़रत अली रदिअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि: क़सम खुदा की, आसमान से ज़मीन पर गिर पड़ना मेरे लिये आसान है लेकिन हुज़ूर की तरफ कोई झूटी बात की निस्बत करना (जोड़ना) बहोत मुश्किल है। उसके बाद अस्ल हदीस का सिलसिला यूं शुरू होता है, फरमाते हैं: मैं ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को येह फरमाते हुए सुना कि: अखीर जमाने में नवउम्र (कम उम्र) और कम-समझ लोगों की एक जयात निकलेगी। बातें वह ज़ाहिर में अच्छी कहेंगे लेकिन ईमान उन के हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। वह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। (बुखारी शरीफ जिल्द २)

इस तरह और भी कई हदीसें हैं जो इस्लाम के नाम पर उठने वाले एक बड़े फित्ने से मुसलमानों को खबरदार कर रही हैं, तफ्सील के लिये मशहूर किताब “तबलीग़ी जमात अहादीस की रौशनी में” देखी जा सकती है।...... इन हदीसों की रौशनी में जब हम आज के दौर पर नज़र डालते हैं तो हमें नमाज़, रोज़े और दीन के नाम पर बुलाने वाली एक जमात दिखाई देती है जो बातें तो ज़ाहिर में अच्छी करती है मगर नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की अज़मत से दूर और बुज़ुर्गों के अक़ीदों से हट कर अक़ीदा पेश करती ह। इसे देख कर हमारे दिल में यह सवाल पैदा होता है कि कहीं यह वही जमात तो नहीं जिस की खबर

हदीसे पाक में आई है? इस सवाल का जवाब जानने के लिये हम उस के अक़ीदे और तालीमात की छानबीन करते हैं।

किसी भी जमात या तहेरीक़ की सच्चाई को परखने के लिये उस की बुनियाद रखने वालों और पेशवाओं के अक़ीदों को देखा जाता है। देवबंदी जमात के शैखुल-इस्लाम मोलवी हुसैन अहमद लिखते हैं: "जब कोई तहेरीक किसी शख्स की तरफ मंसूब (जुड़ी) होगी तो वह क़िबला-ए-तवज्जो (तवज्जो का मरकज़) होगा और उस शख्स के अक़ाइद व अखलाक का असर मिम्बरों पर क़तई (यक़ीनी) तौर पर पड़ेगा।"

(मक़तूबाते शैखुल-इस्लाम, जिल्द २, सफह ३७७)

यानी जब कोई तहेरीक किसी से निसबत रखती है तो सब की नज़र उस पर होती है और उसके अक़ीदे और तालीमात का असर उसके मान्ने वालों पर ज़रूर पड़ता है। देवबंदी जमात के शैखुल-इस्लाम की बात की रौशनी में जब हम कल्मा और नमाज़ के नाम पर गली कूचों में चक्कर लगाने वाली जमात के उलमा और पेशवाओं को टटोलते हैं तो हमें क़ुरआने करीम का येह इर्शाद याद आ जाता है:

اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ (پ۸ ع ۱۰)

तर्जुमा: "उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को वाली बनाया और समझते येह हैं कि वह राह पर हैं।" (प.८, र.१०)

येह बात खयाल में रहे कि किसी को येह बोल कर धोका नहीं दिया जा सकता कि आईये साहब! मैं आप को धोका दे रहा हूँ, बलके धोका देने वाला शख्स पहले हमदर्दी और मुहब्बत की बातें करता है फिर धोका देता है। इसी तरह अगर कोई शख्स या जमात बज़ाहिर अच्छी और नेक बात कहे तो ज़रूरी नहीं कि वह सही ही हो, बलके उसकी सच्चाई का पता लगाना पड़ता है। देवबंदी तबलीग़ी जमात के पेशवाओं में मोलवी इल्यास कांधलवी, मोलवी अशरफ अली थानवी, मोलवी कासिम

नानोतवी, मोलवी रशीद अहमद गंगोही और मोलवी इस्माईल देहलवी वग़ैरा के नाम नज़र आते हैं। देवबंदी जमात की हक़ीक़त जाने के लिये इन मोलवियों के अकीदों को देखा जाएगा।

मोलवी इस्माईल देहलवी की किताब "तक़वियतुल-ईमान" के बारे में देवबंदियों के बड़े पेशवा मोलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं: "तक़वियतुल-ईमान निहायत उमदा (अच्छी) किताब है। इस का रखना और पढ़ना और अमल करना ऐन (हूबहू) इस्लाम है।" (फतावा रशीदिया, मतबूआ क्राची, स.४१)

लेहाज़ा आईये सब से पहले "तक़वियतुल-ईमान" और उसके लिखने वाले मोलवी इस्माईल देहलवी के अक़ीदे देखये।

मोलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा

मोलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब "सिराते-मुसतक़ीम" के सफहा १२६ पर लिखा: "(नमाज़ में) ज़ेना (बदकारी) के वस्वसे से अपनी बीबी (बीवी) की मुजामेअत (सोहबत) का खयाल बेहतर है और शेख (पीर) या इसी जैसे और बुज़ुर्गों की तरफ, खवाह (चाहे) जनाब रिसालते मआब (रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) ही हों अपनी हिम्मत (धयान) को लगा देना अपने बैल और गधे की सूरत में मुस्तग़रक (डूबे हुऐ) होने से बुरा है क्यों कि शेख का खयाल तो ताज़ीम और बुज़ुर्गी के साथ इन्सान के दिल में चिमट जाता है और बैल और गधे के खयाल को न तो इस क़दर चस्पीदगी (चिमटने की ताक़त) होती है और न ताज़ीम बलके हक़ीर और ज़लील होता है और ग़ैर की यह ताज़ीम और बुज़ुर्गी जो नमाज़ में मलहूज़ (शामिल) हो वह शिर्क की तरफ खींच कर ले जाती है"

मआज़ल्लाह! सौ बार मआज़ल्लाह! इतना खतरनाक जुमला लिखने से पहले इनका क़लम टूट क्यों नहीं गया कि गधे और बैल के खयाल से बुरा नबी के खयाल को बताया। क्या ऐसा जुमला लिखने वाले को मुसलमान कहा जायगा? देवबंदियों

वहाबियों से पूछा जाए कि अगर इस्माईल देहलवी की तालीम हक़ है तो बताओ नमाज़ किस तरह पढ़ी जाए? इस लिये कि नमाज़ में क़ुरआन मजीद पढ़ना फ़र्ज़ है, इस में हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की तारीफ़ व तौसीफ़ और ज़िक्र है और अगर बज़ाहिर किसी आयत में न भी हो तो अत्तहीयात में ज़रूर है क्यों कि इस में हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम पर सलाम भेजा जाता है और शहादत पेश की जाती है। इस लिये उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम का खयाल ज़रूर आएगा। अब दो ही बात है, ताज़ीम के साथ आएगा या तहक़ीर (ज़िल्लत) के साथ। अगर ताज़ीम के साथ आया तो इस्माईल देहलवी के कहने के मुताबिक़ शिर्क की तरफ़ खींच कर ले गया और अगर ज़िल्लत के साथ आया तो यक़ीनन कुफ़्र है। लेहाज़ा नमाज़ कैसे पढ़ी जाये? आखरी रास्ता येह है कि अत्तहीयात ही न पढ़ें मगर मसला येह है कि अत्तहीयात का पढ़ना वाजिब है और वाजिब को जान बूझ कर छोड़ दें तो नमाज़ नहीं होती। इसी तरह देवबंदी मज़हब के मुताबिक़ तरावीह में पूरा क़ुरआने-अज़ीम पढ़ना भी शिर्क हो जाएगा क्यों कि इस में सैकड़ों आयतों में नबीए करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम और दीगर नबियों का ज़िक्र आया है। खुलासा यह कि देवबंदी मज़हब के मुताबिक़ कोई नमाज़ किसी भी तरीक़े से हो ही नहीं सकती।

आईये अब मदरसा देवबंद की बुन्याद रखने वाले देवबंद के बहुत बड़े पेशवा मोलवी कासिम नानोतवी का अक़ीदा देखये।

मोलवी कासिम नानोतवी का अक़ीदा

इस अक़ीदे को पढ़ने से पहले कुछ ज़रूरी बातें ध्यान में रखें। हज़रत इमाम क़ाज़ी अयाज़ रहेमतुल्लाह अलैह की किताब "शेफ़ा शरीफ़" के हिस्सा २ में सफ़ह २५ के वह जुमले जिसे मुफ़्ती मोहम्मद शफ़ी देवबंदी ने अपनी किताब "ख़त्मुन्नबुव्वत-

फिल-आसार" में क़ादयानियों के खिलाफ दलील के तौर पर लिखा है येह हैं: तर्जुमा, "नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने येह खबर दी कि वह खातमन-नबिय्यीन हैं और येह खबर दी कि अल्लाह तआला ने उन्हें खातमन-नबिय्यीन बनाया और पूरी मखलूक का रसूल बनाया। तमाम उम्मत का इस पर इजमा (इत्तेफाक) है कि येह कलाम (खातमन-नबिय्यीन) अपने ज़ाहिरी मतलब पर समझा गया है। इस का जो मतलब है यानी आखरी नबी होना, यही मुराद है जिस में न कोई तावील हैं न कोई तखसीस है।" यानी मुफ्ती शफी देवबंदी का भी यही कहना है कि लफ्ज़ खातमन-नबिय्यीन का मतलब आखरी नबी ही है जिस में किसी दूसरे मतलब की गुंजाईश नहीं मगर मोलवी कासिम नानोतवी ने अपनी किताब "तहज़ीरुन्नास" के सफहा ३ पर इस का इन्कार करते हुए लिखा कि: "अवाम के खयाल में तो रसूल सलअम (सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) का खातिम होना बा ईं माअना (इस मतलब में) है कि आप का ज़माना अंबिया-ए-साबिक़ (पिछले नबियों) के ज़माने के बाद और आप सब में आखिर नबी हैं मगर अहले-फहेम पर रौशन होगा कि तक़द्दुम या ताखखुरे ज़मानी (ज़माने में अव्वल या आखिर होने) में बिज़्ज़ात कुछ फज़ीलत नहीं। फिर मक़ामे मदह में وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ फरमाना इस सूरत में क्यों कर सही हो सकता है ?" मआज़ल्लाह!

नोटः अस्ल इबारत में अधूरा दुरूद यानी सलअम. लिखा है।

हालांकि हदीस शरीफ में खातमन-नबिय्यीन का मतलब खुद नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने इन अलफाज़ में बयान फरमाया है: اَنَا خَاتَمُ النَّبِيّٖنَ لَا نَبِيَّ بَعْدِیْ

मैं अंबिया का खातिम हूं मेरे बाद कोई नबी नहीं। (मिश्कात किताबुल-फितन, सफहा ४९५) मगर क़ासिम

नानोतवी ने खातमन-नबिय्यीन के इस मतलब का इन्कार कर दिया और आखरी नबी समझने को जाहिलों का खयाल लिख दिया, मआज़ल्लाह! यहां क़ासिम नानोतवी ने **अहले फहेम** के मुक़ाबले में **अवाम** का लफ्ज़ कहा है। अहले फहेम का मतलब है समझदार लोग, तो अवाम से मुराद ना समझ या जाहिल लोग हुवे। इस तरह कहने का मतलब येह हुवा कि खातमन-नबिय्यीन के लफ्ज़ से नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को आखरी नबी समझना जाहिलों और नासमझ लोगों का खयाल है। मआज़ल्लाह ! सौ बार मआज़ल्लाह!

हज़रत अबू हुरैरह रदिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि: "मुझे दूसरे नबियों और रसूलों पर ६ चीज़ों के ज़रिये फज़ीलत और बड़ाई दी गई। पहली चीज़ तो येह कि मुझे कलमाते जामेआ की खूबी अता हुई, दूसरी चीज़ येह कि रोअब व दबदबे के ज़रिये मेरी मदद की गई, तीसरी चीज़ येह कि माले-ग़नीमत मेरे लिये हलाल किये गए, चौथी चीज़ येह कि तमाम रूए-जमीन (पूरी जमीन) मेरे लिये मस्जिद और ताहिर व मुतहहर (पाक व साफ) बनाई गई, पांचवी चीज़ येह कि मुझे तमाम जहान के लिये रसूल बनाया गया और छटी चीज़ येह कि मेरी ज़ात पर नबियों के आने का सिलसिला खत्म किया गया।"

(मिश्कातुल-मसाबीह, किताबुल-फितन, सफह ५१२)

यहां आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने आखरी नबी होने को फज़ीलत और बड़ाई फरमाया मगर क़ासिम नानोतवी ने आखरी नबी होने को फज़ीलत और बड़ाई मानने से साफ इन्कार कर दिया और अपनी इसी किताब के सफहा १४ पर येह गुमराह अक़ीदा लिखा: "अगर बिल-फर्ज़ (फर्ज़ करें) आप के ज़माने में भी कहीं और कोई नबी हो जब भी आप का खातिम होना बदस्तूर (उसी तरह) बाक़ी रहता है।" और सफहा २५ पर

लिखा: "अगर बिलफर्ज़ बादे-जमाना-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खातमीयते-मुहम्मदी में कुछ फर्क न आयगा।" मआज़ल्लाह!

अलग़रज़ क़ासिम नानोतवी ने बड़े ज़ोर शोर से खातमन-नबिय्यीन का मतलब आखरी नबी होने से इन्कार किया है और इसे नासमझ अवाम का खयाल बताया है, अक़ीदा नहीं। खयाल का मतलब है वहेम, गुमान, राए। अब इस का मतलब यह हुवा कि खातमन-नबिय्यीन का मतलब आखरी नबी होना अक़ीदा नहीं जो क़तई, यक़ीनी, ठोस और मज़बूत होता है बल्के नासमझ अवाम की राए है जो उन्हों ने खुद से काइम कर ली है। क़ुरआन व हदीस और बुज़ुर्गों के क़ौल से साबित नहीं। क़ासिम नानोतवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को नासमझ अवाम में दाखिल किया बल्के सहाबाए केराम और पूरी उम्मत को भी नासमझ क़रार दिया। मआज़ल्लाह!

अब आईये रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम और पूरी उम्मत का क़तई यक़ीनी इजमाई (कौमन) अक़ीदा देखिये। रसूले अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने और तमाम सहाबा-ए-केराम ने बल्के पूरी उम्मत ने खातमन-नबिय्यीन का मतलब सिर्फ आखरी नबी होना बताया और वह भी इस क़ैद के साथ कि इस में न तो किसी तावील (दूसरे मतलब) की गुन्जाइश है न किसी तखसीस की। अगर कोई किसी क़िस्म की तावील या तखसीस करे तो काफिर है। जिसे तफसील देखनी हो वह इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा रहेमतुल्लाह अलैह की किताब खतमुन-नबुव्वह देख सकता है जिस में १३० हदीसों और बुज़ुर्गाने दीन के ३० इर्शादात (क़ौल) से साबित किया गया है कि खातमन-नबिय्यीन का मतलब आखरी नबी है और यह ज़रूरियाते दीन (दीन की ज़रूरत) से है। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के ज़माने में या हुज़ूर

सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के बाद किसी नबी होने को जाईज़ जानने वाला काफिर है। चाहे वह नबी बिल-अज्ञ माने या ज़िल्ली बरोज़ी, हर सूरत में काफिर है। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के ज़माने में या हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के बाद कोई नबी जाइज़ मानना हुजूर के आखरी नबी होने का इनकार है और कुरआने करीम को झुटलाना है। इस लिये येह कहना कि: "अगर हुजूर (सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) के ज़माने में या हुज़ूर (सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) के ज़माने के बाद कोई और नबी पैदा हो तो आप का खातिम होना बदस्तूर बाकी रहता है, खातमिय्यते-मुहम्मदी में कुछ फर्क़ न आएगा।" ऐसा कहना कुरआन को झुटलाना है और ऐसा कहने वाला काफिर है।

बुजुर्गाने दीन के अक़्वाल से यह भी साबित है कि उम्मत का इस पर इज्मा (इत्तेफाक़) है कि इस में न किसी तावील (दूसरे मतलब) की गुंजाईश है न तखसीस की बल्के किसी क़िस्म की तावील या तखसीस करने वाला काफिर है। इस लिये यह कहना कि: "खातमन-नबिय्यीन का मतलब नबी-बिज़्ज़ात है" ज़रूर कुफ्र है और ऐसा कहने वाला भी काफिर है। लेहाज़ा अब आप खुद फैस्ला कर सकते है की क़ासिम नानोतवी मुसलमान रहा या नहीं?

नोट: अगर आप को नानोतवी की इस गुस्ताखी के बारे में और भी तफसील चाहिये तो अपने मोबाईल में लिखें: TNDT और 8080430440 पर SMS करदें।

मोलवी क़ासिम की एक और गुस्ताखी

मोलवी क़ासिम नानोतवी ने अपनी किताब तहज़ीरुन्नास के सफहा ५ पर येह गुस्ताखी भी लिखी: "अम्बिया अपनी उम्मत से मुम्ताज़ (बडे) होते हैं तो उलूम (इल्म) ही में मुम्ताज़ होते हैं, बाकी रहा अमल, इस में बसा अवक़ात (बहोत मर्तबा)

बज़ाहिर उम्मती मसावी (बराबर) हो जाते हैं, बलके बढ़ जाते हैं।" मआज़ल्लाह! यानी कह रहा है कि अमल में नबी को उम्मती पर कोई फज़ीलत नहीं, अमल में उम्मती नबी के बराबर हो सकते हैं, बलके बढ़ सकते हैं। यहाँ मोलवी क़ासिम नानोतवी ने सिर्फ इल्म में नबी की बड़ाई मानी है मगर इसी देवबंदी जमात के एक और पेशवा मोलवी अशरफ अली थानवी ने तो इस का भी इन्कार कर दिया और कह दिया कि जैसा इल्म नबी को है वैसा इल्म बच्चों, पागलों और जानवरों को भी हासिल है। मआज़ल्लाह! यानी नबी को उम्मती से अमल में या इल्म में किसी चीज़ में कोई फज़ीलत न रही। दिल थाम कर पढ़िये!

मोलवी अशरफ अली थानवी का अक़ीदा

अशरफ अली थानवी ने अपनी किताब "हिफज़ुल-ईमान" के सफहा ७ पर नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताखी करते हुए लिखा: "फिर येह कि आप की ज़ाते-मुक़द्दसा (पाक ज़ात) पर इल्मे-ग़ैब का हुकम किया जाना अगर बक़ौले ज़ैद (ज़ैद के कहने के मुताबिक़) सही है तो दरयाफ्त तलब येह अमर (सवाल) है कि इस ग़ैब से मुराद बाज़ (कुछ) ग़ैब है या कुल ग़ैब? अगर बाज़ उलूमे-ग़ैबिया (ग़ैब के इल्म) मुराद हैं तो इस में हुज़ूर ही की क्या तखसीस (खासियत) है? ऐसा इल्मे-ग़ैब तो ज़ैद व उमर बल्के हर सबी व मजनूं (बच्चे और पागल) बलके जमीअ हैवानात व बहाएम (तमाम जानवरों और चौपायों) के लिए भी हासिल है।" मआज़ल्लाह!

यानी थानवी का कहेना है कि नबी ससल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को जो बाज़ इल्मे-ग़ैब हासिल हैं इस में आप की कोई खुसूसियत और बड़ाई नहीं, ऐसा इल्मे-ग़ैब तो हर आम आदमी, बच्चे, पागल बलके तमाम जानवरों और चौपायों को भी हासिल है। मआज़ल्लाह, सौ बार मआज़ल्लाह! हालांकि क़ुरआने पाक की कई आयतों और कई हदीसों से

साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को जो बाज़ (कुछ) ग़ैबों का इल्म अल्लाह तआला ने अता फरमाया है वह इतना ज़्यादा है कि तमाम मखलुक में से किसी और का इल्म उस से किसी तरह बराबर नहीं हो सकता मगर थानवी साहब ने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के इल्म को बच्चों, पागलों, जानवरों और चौपायों के इल्म से मिसाल देकर आप सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की शान में जबरदस्त तौहीन की है।

थानवी की इस इबारत का साफ साफ और एक ही मतलब है कि थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के इल्मे-पाक को हर अैरे-गैरे, ज़ैद व उमर व बकर, बलके बच्चों, पागलों बलके जानवरों, चौपायों के इल्म से मिसाल दी है। मआज़ल्लाह! या हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के इल्मे-पाक को इन के बराबर बताया है। और येह बात देवबंदी भी मानते हैं कि इस में हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की सख्त तौहीन और गुस्ताखी है और किसी नबी की तौहीन वह भी नबीयों के सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की तौहीन सब लोगों के नज़दीक कुफ्र है और तौहीन करने वाला काफिर है।

थानवी की इबारत के शुरू में है: "आप की ज़ाते मुकद्दसा (पाक ज़ात) पर इल्मे-ग़ैब का हुक्म किया जाना" का मतलब येह है कि एक चीज़ दूसरे के लिये साबित की जाए। इस लिये इबारत का मतलब सिर्फ येह हुवा कि: "येह कहना कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ैब जानते थे इस ग़ैब का मतलब बाज़ (कुछ) ग़ैब है या कुल (तमाम) ग़ैब।" ..... इस इबारत में "इस" का इशारा पहले ज़िक्र किया हुवा ग़ैब है यानी जो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम जानते थे, जो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को हासिल थे। इस लिये

बाज़ (कुछ) ग़ैब कहने से मतलब हुज़ूर ही का इल्मे-ग़ैब है और
यही मतलब तै (फिक्स) है। इस लिये कि मुक़्सिम (टुकडे होने
वाले) का सिद्क (सच होना) अक़्साम (टुकडों) पर ज़रूरी है
वरना क़िस्म क़िस्म न रहे, बलके बेगाना (अजनबी) हो जाए।

इस के बाद यही बाज़ (कुछ) इलमे-ग़ैब जो हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को हासिल हैं उसके बारे में कहा: "इस में हुज़ूर ही की क्या तखसीस (खासियत) है? ऐसा इल्मे-ग़ैब तो हर ज़ैद व उमर व बकर बल्के हर सबी व मजनून (पागल) बल्के जमीअ (तमाम) हैवानात व बहाएम (जानवरों) के लिये भी हासिल है।" मआज़ल्लाह!

इस लिये अब किसी शक के बग़ैर साफ साफ ज़ाहिर हो गया कि थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के इल्मे-पाक को बच्चों, पागलों, जानवरों, चौपायों के इल्म से मिसाल दी या उन के बराबर बताया। इस बात को मुख्तसर में यूं समझये कि थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये जो इल्मे-ग़ैब माना उस की दो क़िस्में कीं, बाज़ यानी कुछ ग़ैब और कुल यानी सब ग़ैब। कुल ग़ैब का हासिल होना तो कुरआन व हदीस से और अक़्ली तौर पर ग़लत माना, तो साबित हुआ कि थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये बाज़ इल्मे-ग़ैब हासिल माना और इसी के बारे में लिखा कि ऐसा इल्मे ग़ैब तो हर ज़ैद व उमर व बकर यानी हर अैरे-ग़ैरे बलके बच्चों, पागलों, जानवरों को भी हासिल है। मआज़ल्लाह!

अब अगर लफ्ज़ "ऐसा" को मिसाल के लिये मानें तो थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के ज़बर्दस्त ऊंचे इल्म को इन हक़ीर चीजों के कमतर और मामूली इल्म से मिसाल दी और येह यक़ीनन हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की शान में खुली तौहीन है।

और अगर लफ्ज़ "ऐसा" का मतलब "इतना" या

"इस क़दर" लिया जाए तो मतलब येह होगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम का अज़ीमुश्शान और बहुत ज़्यादा इल्म जिस की मिक़दार कोई मुक़रब फरिश्ता और नबी-ए-मुर्सल भी नहीं जान सका, उस इल्म को इन हक़ीर और मामूली चीजों के इल्म के बराबर कर दिया। मआज़ल्लाह! और येह भी यक़ीनन बदतरीन तौहीन और कुफ्र है।

थानवी साहब देवबंदियों के हकीमुल उम्मत थे और हक़ीम का कोई क़ौल या इर्शाद हिकमत से खाली नहीं होता। इस राज़ को उन के भोले भाले मुरीद क्या जानें? थानवी ने तो "हुज़ूर ही की क्या तखसीस है?" लिख कर इस बात को फाईनल कर दिया कि वह हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ही के इल्म को लिख रहा है कि ऐसा इल्म तो ज़ैद व उमर व बकर को भी हासिल है इस लिये कि येह सवालिया जुमला इन्कार के मतलब में है। इसका मतलब यह हुवा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की कोई खासियत नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की इस खूबी में हर ऐरा-गैरा यहां तक कि बच्चे, पागल और जानवर भी शरीक हैं। येह खूबी कौन सी है? वही जो पहले ज़िक्र हुई यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये कुछ इल्मे-ग़ैब का हासिल होना, इस लिये कि तखसीस (खासियत) के इन्कार को मुशारेकत (किसी और का शामिल होना) ज़रूरी है।

नोट: अगर आप को थानवी की इस गुस्ताखी के बारे में और भी तफसील चाहिये तो अपने मोबाईल में लिखें: **HIDT** और **8080430440** पर **SMS** कर दें।

थानवी का कल्मा

एक मर्तबा किसी मुरीद ने थानवी को लिखा कि मैं ने ख्वाब में अपने आप को देखा कि "ला इलाहा इल्लल्लाह के बाद अशरफ अली रसूलुल्लाह" मुंह से निकल जाता है। जब बेदार होकर

(जाग कर) कोशिश करता हूँ कि सही कल्मा और सही दुरूद पढ़ूँ लेकिन ज़बान काबू में नहीं है, हर जगह "मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह" के बजाए "अशरफ अली रसूलुल्लाह" निकलता है। मोलवी थानवी ने उस को जवाब लिखा कि: "इस वाकेआ में तसल्ली थी कि जिस की तरफ तुम रुजू करते हो वह बेऔनेही तआला मुत्तबए-सुन्नत है" (यानी तुम जिस की पैरवी करते हो वह सुन्नत का पाबंद है) मआज़ल्लाह! (रिसाला अलइमदाद, माहे सफर, १३३६ हि.)

लिखना तो येह चाहिये था कि जब जागते में भी कुफ्र का जुम्ला कहा तो जल्दी तौबा करो और सही कल्मा पढ़ो वरना मुसलमान नहीं रहोगे। मगर नहीं लिखा और क्यों लिखते कि दिल अंदर से खुश हुवा होगा। इस लिये तसल्ली के अल्फाज़ लिख कर हौस्ला बढ़ाया। अगर यही वाकेआ गुलाम अहमद क़ादयानी से जोड़ कर किसी तबलीग़ी जमात के मिम्बर को सुनाया जाए तो वह फौरन कहेगा कि येह कुफ्र है। लेकिन अगर उसे येह बताया जाए कि येह मोलवी अशरफ अली थानवी ने लिखा है तो उस के चहरे का रंग बदल जाएगा और वह थानवी की ग़लती मानने के बजाए टालमटोल से काम लेगा।

अभी आप ने पढ़ा कि अशरफ अली थानवी ने नबी के इल्मे-ग़ैब को बच्चों, पागलों और जानवरों के जैसा बताया, आइये अब देखिये कि इन की ही जमात के एक और मोलवी रशीद अहमद गंगोही ने इस से भी ज़्यादा खतरनाक तीर चलाया और नबी से ज़्यादा शैतान का इल्म बताया, मआज़ल्लाह!

मोलवी रशीद अहमद गंगोही का अक़ीदा

रशीद अहमद गंगोही ने अक़ीदा पेश किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के इल्म से ज़्यादा इल्म शैतान को हासिल है, मआज़ल्लाह! ब्राहीने कातेआ में लिखा: "अल्हासिल ग़ौर करना चाहिये कि शैतान व मलकुल-मौत का हाल देख कर इल्मे-मुहीते-ज़मीन (सारी ज़मीन के इल्म) का

फख़्रे-आलम (नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) को खिलाफे-नुसूसे-कतईया के (कुरआन व हदीस के खिलाफ) बिला-दलील (दलील के बग़ैर) महेज़ कयासे-फासेदा (सिर्फ ग़लत अंदाज़े) से साबित करना शिर्क नही तो कौन सा ईमान का हिस्सा है? शैतान व मलकुल-मौत को येह वुसअत (बड़ाई) नस से साबित हुई। फख़्रे-आलम की वुसअते-इल्म की कौन सी नस्से-क़तई (नबी के इल्म की बड़ाई के लिये कौनसी दलील) है कि जिस से तमाम नुसूस को रद कर के एक शिर्क साबित करता है।" मआज़ल्लाह! (ब्राहीने-क़ातेआ कदीम, सफह ५१)

यानी रशीद अहमद गंगोही ने सारी ज़मीन का इल्म हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये तो शिर्क कहा मगर उसी शिर्क को शैतान के लिये बड़ी खुशी के साथ नस (कुरआन व हदीस) से साबित माना। शैतान मरदूद से ऐसा लगाव और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम से ऐसी दुश्मनी? इसी दुश्मनी ने तो अक़्ल को रवाना कर दिया। येह भी न सोचा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये जिस इल्म का साबित करना शिर्क है वह शैतान के लिये कैसे ईमान हो सकता है? और वह भी नस से? यानी कुरआन व हदीस से? कया कुरआन व हदीस से भी शिर्क साबित होता है??? येह है देवबंदियों की अक़्ल और उनका अक़ीदा! अब आगे पढ़िये।

ज़मीन का इल्मे-मुहीत (सारी ज़मीन का इल्म) गंगोही ने शैतान और मलकुल-मौत के लिये नस यानी कुरआन व हदीस से साबित माना फिर इसी इल्म को हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये शिर्क बताया और येह शिर्क उसी वक़्त होगा जब कि इसे अल्लाह तआला की "खास सिफत" मानें और जब इसे अल्लाह तआला की "खास सिफत" मानेंगे तो शैतान और मलकुल-मौत के लिये इसे साबित मान्ने का मतलब येह होगा कि शैतान और मलकुल-मौत खुदा के शरीक़ हैं, और

गंगोही ने इन दोनों के लिये साबित माना तो ज़रूर उस ने शैतान और मलकुल-मौत को खुदा का शरीक़ माना। येह इस इबारत (मज़मून) का पहेला कुफ्र और शिर्क हुवा।

फिर इस कुफ्र व शिर्क को नस यानी क़ुरआन व हदीस से साबित माना येह दूसरा कुफ्र हुवा।

इस कुफ्र को छुपाने के लिये गंगोही के मानने वाले येह तावील (सफाई) करते हैं कि: "शैतान और मलकुल-मौत के लिये जो साबित माना गया है वह इल्मे अताई (अता किया हुवा इल्म) है और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये जिसे शिर्क कहा गया है वह ज़ाती है।"

इस से इतना तो साबित हो ही गया कि गंगोही के साथियों को भी यक़ीन है कि गंगोही पर लगाया जाने वाला हुक्म हक़ है और उस के मज़मून से कुफ्र ज़ाहिर है। अब रही येह तावील (सफाई) कि शैतान और मलकुल-मौत के लिये इल्मे-अताई (अता किया हुवा इल्म) माना है और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये जिसे शिर्क कहा गया है वह ज़ाती है। इस तावील (दलील) का ग़लत होना हर समझदार आदमी महसूस कर सकता है। अगर गंगोही को हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के इल्मे-ज़ाती (खुद के इल्म) का इन्कार करना होता तो यूं कहेता कि: "शैतान और मलकुल-मौत का इल्म अताई है, इस पर क़यास कर के हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये ज़ाती इल्म साबित करना सही नहीं क्यों कि क़यास में मक़ीस-अलैह (जिस पर क़यास किया जाय) के हुक्म को मक़ीस के लिये साबित किया जाता है और यहां मक़ीस-अलैह (शैतान और मलकुल-मौत) का इल्म अताई है और मक़ीस यानी हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम का इल्म ज़ाती।"......मगर गंगोही ने येह नहीं कहा बल्के येह कहा कि: "शैतान और मलकुल-मौत के

लिये वुसअते-इल्म (ज़्यादा इल्म) साबित है और फख्रे-आलम (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) के लिये कोई नस्से-कतई (क़ुरआन व हदीस की दलील) नहीं बल्के शिर्क है।" इस तरह गंगोही ने साफ साफ बता दिया कि उस ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये इल्मे-अताई मानने ही को शिर्क कहा है। लेहाज़ा साबित हुवा कि हमारा इलज़ाम सही है और गंगोही के मज़मून में कुफ्र मौजूद है।

ब्राहीने-क़ातेआ सफहा ५० पर है : "शैतान को जो येह वुसअते-इल्म (इल्म की बड़ाई) दी" और इसी पर क़यास कर के हुज़ूर के लिये मानने को शिर्क कहा और आप पढ़ चुके कि क़यास में वही हुक्म मुक़ीस के लिये साबित माना जाता है जो मुक़ीस-एलैह के लिये साबित हो और शैतान के लिये इल्मे-अताई है तो गंगोही ने इल्मे-अताई ही के मानने को शिर्क कहा है।

गंगोही की इबारत में है कि : "शैतान का हाल देख कर इल्मे-मुहीते-ज़मीन (सारी ज़मीन के इल्म) का फखरे आलम (हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) के लिये साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है?" और गंगोही के मानने वालों का दावा है कि यहां गंगोही ने शैतान के लिये इल्मे-अताई साबित किया है। इस लिये उस का हाल देख कर इल्मे-अताई ही साबित होगा और इसी को ऐसा शिर्क कहा जिस में ईमान का कोई हिस्सा नहीं तो ज़ाहिर हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये इल्मे-अताई मानने ही को गंगोही ने शिर्क कहा है।

गंगोही ने लिखा : "शैतान को येह (इल्म की) वुसअत (बड़ाई) नस से साबित हुई। फख्रे-आलम (हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) की वुसअते-इल्म (इल्म ज़्यादा होने) की कौन सी नस्से-कतई (क़ुरआन व हदीस से दलील) है?" ..... इन जुमलों में जिस इल्म को शैतान के लिये नस से साबित माना

उसी इल्म का हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये इन्कार किया और उसे शिर्क कहा और वजह येह बताई कि शैतान के लिये नस (कुरआन व हदीस) से सुबूत है और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये सुबूत नहीं। इस का साफ मतलब येह है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिये नस यानी कुरआन व हदीस से सुबूत होता तो मान लेते। अब गंगोही के मान्ने वाले बताएं कि कया इल्मे-ज़ाती मान लेते? ज़रूर यही कहेंगे कि इल्मे-ज़ाती नहीं बलके इल्मे-अताई मान लेते लेहाज़ा साबित हो गया कि इन लोगों को भी कुबूल है कि शैतान का इल्म अताई है और इसी इल्म का हुज़ूर के लिये इन्कार किया यानी इल्मे-अताई ही का इन्कार किया और इसी को शिर्क कहा।

नोट: अगर आप को गंगोही की इस गुस्ताखी के बारे में और मालूमात चाहिये तो अपने मोबाईल में लिखें: **BQDT** और **8080430440** पर **SMS** कर दें। कोई सवाल हो तो आखिर में लिख दें।

मोलवी इल्यास कांधलवी का अक़ीदा

मोलवी इल्यास कांधलवी ने नबियों की शान में गुस्ताखी करते हुए लिखा: "अगर हक़ तआला (अल्लाह तआला) किसी से काम को लेना नहीं चाहें तो चाहे अम्बिया (नबी) भी कितनी कोशिश करें तब भी ज़ररा नहीं हिल सकता और करा लेना चाहें तो तुम जैसे ज़ईफ (कमज़ोर) से भी वह काम ले लें जो अम्बिया (नबियों) से भी न हो सके।"

मआज़ल्लाह! (मकातीबे-इल्यास, स. १०७, १०८)

अल्लाह तआला की मशियत (मर्ज़ी) बयान करने की आड़ में नबियों की तौहीन की जा रही है और खुद को उन से बरतर (अफज़ल) बताया जा रहा है।

इसी तरह २ हवाले और देखिये जिन से आप को मालूम होगा कि तबलीगी जमात वाले मोलवी इल्यास को नबी का

दर्जा देते हैं या इस से कुछ कम! लिखा :

❋ "आप (मोलवी इल्यास) ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इर्शाद: كنتم خير امة اخرجت للناس تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر की तफ्सीर ख्वाब में इल्क़ा (ज़ाहिर) हुई कि तुम मिस्ल अम्बिया के (नबियों की तरह) लोगों के वासते ज़ाहिर किये गए हो।" मआज़ल्लाह! (मलफ़ूज़ाते-इल्यास)

❋ "एक बार (मोलवी इल्यास ने) फरमाया कि ख्वाब नबूव्वत का ४६वाँ हिस्सा है, बाज़ लोगों को ख्वाब में ऐसी तरक़्क़ी होती है कि रियाज़त व मुजाहेदे से नहीं होती कयों कि उन को ख्वाब में उलूमे-सहीहा (सही इल्म) इल्क़ा (ज़ाहिर) होते हैं जो नबुव्वत का हिस्सा हैं, फिर तरक़्क़ी क्यों न हो? इल्म से मारेफत बढ़ती है और मारेफत से कुर्ब बढ़ता है, इस लिये इर्शाद है: قل رب زدنى علما फिर फरमाया आज कल ख्वाब में मुझ पर उलूमे-सहीहा का इल्क़ा होता है इस लिये कोशिश करो कि मुझे नींद ज़्यादा आए।" (मलफ़ूज़ाते-इल्यास)

देखिये! कितनी दिलेरी के साथ नबुव्वत के मक़ाम की तरफ क़दम बढ़ा रहें हैं।

किसी भी तबलीग़ी अंजुमन का ढ़ांचा २ ही चीजों पर खड़ा होता है, एक तालीम दूसरा तबलीग़ का तरीका। इस उसूल की रौश्नी में जब हम देखते हैं तो हमें येह बात समझ में आती है कि तबलीग़ी जमात के दोनों हिस्सों में से कोई भी हिस्सा इस्लाम से ताल्लुक नहीं रखता। तबलीग़ी जमात वाले से पूछा जाए कि तबलीग़ का जो तरीक़ा आप ने अपनाया है वह किस का है? फौरन जवाब मिलेगा कि येह तरीका सहाबाए-केराम का है, लेकिन तबलीग़ी जमात की बुन्याद रखने वाले मोलवी इल्यास क्या कहते हैं? वह कहते हैं कि: "इस तबलीग़ का तरीक़ा भी मुझ पर ख्वाब में मुनकशिफ (ज़ाहिर) हुवा।" (मलफ़ूज़ाते-इल्यास)

यानी तबलीग़ी जमात का तरीक़ा सहाबा का नहीं बलके

मोलवी इल्यास का बनाया हुवा है। इसी तरह मोलवी इल्यास कांधलवी लिखते हैं कि: "हज़रत मौलाना थानवी रहेमतुल्लाह अलैह ने बहुत बड़ा काम किया है, पस (इस लिये) मेरा दिल चाहता है कि तालीम तो उन की हो और तरीक़ा-ए-तबलीग़ मेरा हो कि इस तरह उन की तालीम आम हो जाएगी।" (मलफूज़ाते-इल्यास, सफहा ५७) यानी तबलग़ी जमात की तालीम मोलवी अशरफ अली थानवी की है और तबलीग़ का तरीक़ा मोलवी इल्यास का है। जब येह बात अच्छी तरह साबित हो गई कि वहाबी तबलीगी जमात का अस्ल मक़सद खुदा और रसूल की तालीमात को फैलाना नहीं है बलके मोलवी थानवी की तालीमात को आम करना है तो फिर सवाल येह पैदा होता है कि तबलीग़ी जमात वाले अपने इस मक़सद को छुपाते क्यों हैं? और येह कितना बड़ा झूट है कि जब अवाम के सामने आते हैं तो कहते हैं कि हम खुदा व रसूल का दीन फैलाने में लगे हैं। हालांकि अस्ल मक़सद येह नहीं है। सोचिये! जिस जमात की शुरूआत ही झूट से हाती हो, उस की इन्तेहा किस चीज़ पर होगी?

अशरफ अली थानवी के अक़ीदे तो आप ने पढ़ लिये। आईये अब येह भी देखये कि इन की मजलिस में क़ुरआन व सुन्नत और फिक़ही मसाइल पर संजीदा इल्मी बातें होती थी या सिर्फ बेहयाई और बेशर्मी की बातें? यहां चंद नमूने पेश किये जा रहे हैं। अगर सबको इकट्ठा किया जाय तो एक किताब बन जाए।

तबलीग़ी जमात के हकीमुल उम्मत मोलवी अशरफ अली थानवी की बेहयाई

❊ मोलवी थानवी से पूछा गया कि मोहब्बत के आदाब क्या हैं? फरमाया: "मोहब्बत होगी तब खुद बखुद आदाब मालूम हो जाएंगे, जैसे लड़का बालिग़ हो जाता है तो खुद बखुद शहवत होने लगती है और तरकीबें आ जाती हैं, फिर उसे मोहब्बत के आदाब बतलाने की ज़रूरत नहीं रहती। नाबालिग़ बच्चे को किस तरह

समझाएं कि जिमा (औरत के साथ हमबिस्तरी) इस तरह होता है?"
(हुस्नुलअज़ीज़, जिल्द १, हिस्सा ३, क़िस्त १८, मलफ़ूज़ ५६९)

* एक आदमी ने थानवी से पूछा कि: "किसी औरत को इस निय्यत से देखना कि अगर इस से निकाह हुवा तो इसी तरह देखूंगा, तो देखना कैसा है? "जवाब में थानवी ने लिखा कि: "किसी औरत से ज़िना करें और येह निय्यत करे कि अगर इस से निकाह हो गया तो इसी तरह सोहबत किया करूंगा, तो येह कैसा है?" (अफादातुल-यौमिया, जिल्द ३, किस्त १७, मलफ़ूज़ २०७)

देखिये! शरीअत का हुक्म बताने की बजाए ऐसा बेहूदा सवाल किया कि पूछने वाला शर्म से पानी पानी हो गया।

* थानवी ने कहा: "तरीक़ में अगर लज़्ज़त मक़सूद है तो बीवी को बग़ल में लेकर जिक्र करें, खुदा की क़सम बहोत लज़्ज़त आयगी, एक ज़र्ब इधर हो और एक ज़र्ब उधर हो।" मआज़ल्लाह!
(हुस्नुल-अज़ीज़, जिलद १, हिस्सा ३, किस्त १८, मलफूज ५०६)

* कहीं नौकरी करने वाले को मोलवी थानवी ने कहा:
"तुम बड़े तेज़ हो, निकाह कर लो, सब जोश निकल जायगा"
(हुस्नुल-अज़ीज़, मलफूज १७०)

* नए आने वालों की तरफ मोलवी थानवी जल्दी तवज्जोह नहीं करते थे, इस की वजह बताते हुए मिसाल में कहते हैं: "रंडी और ग्रसतन में फर्क होता है, रंडी २-४ रूप्ये में राज़ी हो जाएगी लेकिन ग्रसतन ज़रा मुश्किल से रज़ामंद होती है।"
(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ३, किस्त १८, मलफूज ६१९)

* मोलवी थानवी सह-दरी में दोपहेर के वक़्त आराम कर रहे थे, एक शख्स मिलने गया लेकिन थानवी ने मना किया, वह चला गया, फिर थानवी ने कहा: "मैं ज़रा आराम करने लेटा था कि बस आ मौजूद हो गए। रंडवे जब बैठने दें तब तो रांडें बैठें।"
(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द २, हिस्सा२, क़िस्त १५, मलफूज़ ३२९)

* थानवी ने कहा: "मैं ने हसीनों को देखा है झिंझलाते और

मुंह चढ़हाते वक्त ऐसे लगते हैं कि बस फिदा हो जाओ।"

(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सा ४, क़िस्त ११, मलफूज ६२४)

* थानवी से एक शख्स ने पूछा कि आप के पास रंडी तो कोई नहीं आती? कहा कि रंडवे तो आते हैं? वह एक ही हैं चाहे रंडी हो या रंडवे हों।

(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द १; हिस्सा ३, क़िस्त १८, मलफूज ४५)

* थानवी लिखता है: "एक शख्स ने मुझ से कहा कि ज़िक्र में मज़ा नहीं आता, मैं ने कहा कि ज़िक्र में कहाँ? मज़ा तो मज़ी में होता है जो बीबी (बीवी) से मलाअेबत के वक़्त खारिज होती है, यहाँ कहाँ ढूंडते फिरते हो?" मआज़ल्लाह!

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ४, सफहा ६६८)

हक़ीक़त का एतेराफ

* थानवी ने खुद इक़रार किया और कहा: "यहां (थाना भवन) पर तो जो बहुत ही बेहया होगा वही ठहेर सकता है।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ३, सफहा २६५)

* "थानवी के मामू ने थानवी से मिलने के लिये आने पर नंगा होकर आने की शर्त रखी। थानवी ने कहा मेरा क्या बिगड़ता? मैं आंखें बंद कर के मुसाफहा कर लेता।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ४, क़िस्त २२, मलफूज ११२)

* हाफिज़ जी के निकाह की हिकायत: लड़कों ने कहा निकाह में बहोत मज़ा है, हाफिज़ जी ने निकाह किया। रात भर रोटी लगा लगा कर खाई। सुबह को कहा: हमें तो न नमकीन, न मीठी, न कड़वी मालूम हुई। लड़कों ने कहा मारा करते हैं। रात खूब जूते से मारा। महेल्ला जमा हो गया। रुस्वाई हुई। तब लड़कों ने खुल कर बताया। अब उस पर अमल किया और कहा वाक़ई बहोत मज़ा है।

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ३, क़िस्त १४, मलफूज ५३७)

नोट: येह हिकायत थानवी ने यह समझाने के लिये बयान की

के शरीअत के हुक्म पर अमल करने में सुकून है।

❊ पड़ोसी के मकान में एक औरत बन ठन कर बैठी थी, थानवी जी खिड़की से देखते हैं।

(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द २, हिस्सा २, क़िस्त १५, मलफूज़ १५३)

❊ "अवाम के अक़ीदे की बिलकुल ऐसी हालत है जैसे गधे का उज़वे-मखसूस, बढ़े तो बढ़ता ही चला जाए और जब गाएब हो तो बिल्कुल पता ही नहीं, वाक़ई अजीब मिसाल है।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ४, सफह ७)

❊ "मैं तो कहा करता हूँ कि हिंदुस्तान की औरतें हूरें हैं।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ४)

नोट: इस में थानवी साहब का तजरुबा बोल रहा है!

❊ "एक अंग्रेज ने जो अपनी बीवी के साथ मुसलमान हुवा था, सवाल किया था कि: हम हिंदुस्तान आना चाहते हैं और हमारी मेम भी हमराह (साथ) होगी और वह पर्दा न करेगी, मैं ने लिख दिया कि आप के लिये इजाज़त है।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ६, सफह २४)

नोट: शरीअत इन के हाथ का खिलौना है, अब योरप की हूर से दिल बहेलाना है।

❊ थानवी के खलीफा ख्वाजा अज़ीज़ुल हसन ने थानवी से कहा: "काश मैं औरत होता हुज़ूर के निकाह में !" थानवी ने कहा: "यह आप की मोहब्बत है, सवाब मिलेगा, सवाब मिलेगा।" (अशरफुस्सवानेह, जिल्द २)

❊ एक मर्तबा थानवी को खांसी हुई, किसी ने कहा: मैं आप के लिये शरीफा (फल) लाऊंगा, आप के लिये मुफीद रहेगा। थानवी ने कहा: शरीफ को लाओ, शरीफा को मत लाओ, मेरी दो दो मन्कूहा (बीवियाँ) हैं, क्या फौज खड़ी करनी है?"

(अफादातुल-योमिया, जिल्द १, किस्त १, मलफूज ६३)

❊ अपने दूसरे निकाह की दलील देते हुए थानवी ने कहा कि:

“दिया सलाई (माचिस) की नोक पर जो लगा रहता है सब में मौजूद है, बहोत सों में रगड़ लग गई है, हम में रगड़ नहीं लगी।”
(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सा २, किस्त १७, मलफूज १४९)

हज़रते सय्यदा आयशा सिद्दीक़ा की तौहीन

एक शख्स ने थानवी से दूसरे निकाह की वजह पूछी, जवाब देते हुए कहा: “मैं ने यह भी खवाब देखा था कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहो अनहा मेरे मकान में तशरीफ लाने वाली हैं, इस से मैं ताबीर समझा कि जो निस्बते-उम्र हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहो अनहा को निकाह के वक्त हुज़ूर के साथ थी वही निस्बत इनको है।” (अफादातुल यौमिया जिल्द १)

मआज़ल्लाह! कितना नापाक है वह इन्सान जो अपनी माँ, न सिर्फ अपनी बल्के तमाम मोमिनों की मुक़द्दस माँ को ख्वाब में देखे और ताबीर येह करे कि कमसिन औरत निकाह में आने वाली है। मआज़ल्लाह!

हज़रते सय्यदा खातूने जन्नत की तौहीन

थानवी ने कहा: “हम ने ख्वाब में हज़रत फातमा रदीअल्लाहो अन्हा को देखा, उनहों ने हम को अपने सीने से चिमटा लिया, हम अच्छे हो गए।” मआज़ल्लाह !

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ६, सफह ७६)

यक़ीनन हजरते फातमा रदीअल्लाहो तआला अन्हा का वह मक़ाम है कि आप की इनायत की नज़र किसी पर पड जाए तो उसे शिफा मिल जाए मगर यहां जो अलफाज़ लिखे गए वह सख्त बेहयाई और तौहीन वाले हैं।

थानवी को सिर्फ बेहयाई की बातें याद थीं

एक साहब ने थानवी से कहा कि “मैं एक मसला पूछना चाहता हूँ” थानवी ने जवाब दिया: “मसला फलाँ मोलवी से दर्याफ्त करो (पूछो), मुझे मसला याद नहीं। मुझ से तो और

ही क़िस्म के मसले दरयाफ्त करो" (मज़ीदुल-मजीद ६५, स.३८)

थानवी ने कहा में हलाल व हराम नहीं देखता

एक मर्तबा कहा कि: "दावत और हदिये में हलाल व हराम को ज़्यादा नहीं देखता क्यों कि मैं मुत्तकी नहीं हूं।"
(कमालाते अशरफिया स.४०६)

थानवी ने लोगों को फांसने के लिये तस्बीह का इस्तेमाल किया

फारिग़ (खाली) वक्त में मोलवी थानवी हाथ में तसबीह ले लेते थे और कहते थे: "मैं ने इस का नाम **जाल** रखा है क्यों कि इसी से लोग फंसते है।" (खातेमातुस-सवानेह स. ४८)

थानवी ने खुद को "बहुत बड़ा धोका" कहा

थानवी ने अपनी पैदाईश का तारीखी नाम "मक्रे-अज़ीम" यानी बहुत बड़ा धोका बताया।

"हज़रत (मोलवी थानवी) ने अहक़र को मुखातब कर के फरमाया कि: देखिये! मेरा "मादा-ए-तारीखी" (तारीखी नाम) "मकरे-अज़ीम" ठीक है या नहीं? मैं आखिर शैखज़ादा हूं। शैखज़ादे बड़े फितरती होते हैं। मुझे भी फितरतें बहोत आती हैं।" (हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द १, सफह १३)

महा बक्कू

थानवी ने कहा: "बाज़ (कुछ) लोग क़लीलुल-कलाम (कम बोलने वाले) होते हैं, इस से भी रुआब होता है, मैं इस क़दर बक्की हूं कि हर वक़्त बोलता ही रहता हूं मगर फिर भी ना मालूम लोग क्यों मुझ को हव्वा बनाए हुए हैं।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द १, सफह १८)

नोट: हव्वा नहीं बनाए थे बलके **मज़ा** और **मज़ी** जैसी बातों का लुत्फ लेने के लिये भीड़ लगी रहती थी।

थानवी ने बूढ़ों को शहेवतप्रस्त बताया

थानवी ने कहा: "बूढ़ों के मुक़ाबले में जवान में असमत ज़्यादा होती है। बूढ़ों में शहवत ज़्यादा होती है। लेहाज़ा बूढ़े आदमी से औरतों को ज़्यादा बचाओ।" (हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द १ हिस्सा ४, किस्त १९, मलफूज ६२३) यानी थानवी हर बूढ़े को अपने जैसा बद-चलन और बेहया समझता था।

नेक लोगों को हवसनाक बताया

"फासिक फाजिर की शहवत कुछ आंख की राह से, कुछ खयालात की राह से निकल जाती है! मुत्तक़ी का सब ज़खीरा कोठरी ही में रहता है। इन में कुव्वत ज़्यादा होती है। लेहाज़ा औरतों को बुजुर्गों से बचाना चाहिये।"

(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द १, हिस्सा ४, किस्त १९, मलफूज ६२३)

खुद को नफ्स की बड़ी बड़ी शरारतों में डूबा बताया

एक शख्स ने खत लिखा कि मेरी बहू जिस की उम्र १६ या १७ साल थी, उस का इन्तेक़ाल हो गया। निहायत नेक बख्त और मेरी फरमांबर्दार थी। उस के इन्तेक़ाल का मुझ को सदमा हुआ। थानवी ने उस शख्स के बारे में कहा: "इन साहब को और किसी का सदमा न हुवा और १६-१७ बरस की लड़की का सदमा हुवा, वजह येह है कि उस का लहेजा नर्म होगा, नव उम्र थी, उस की तरफ मैलान (झुकाव) होता होगा, इस से लज़्ज़त होती होगी।" फिर कहा: "बड़ी बड़ी शरारतें हैं नफ्स की, मैं चूं कि खुद मुब्तेला हूँ इस लिये मुझे एहसास होता है दूसरों की हालत का। मुम्किन है कि खुद गंजा होने की वजा से दूसरों को भी गंजा समझूं"

(हुस्नुल-अज़ीज़, जिल्द ३, हिस्सा २, किस्त १३)

कारईने केराम! येह है अशरफ अली थानवी की तालीमात की झलकियां जिसे आम करने के लिये दिन रात मेहनत की जा रही है और इस की किताब लड़कियों को जहेज़ में देने की ताक़ीद की जा रही है। इन ज़ालिमों से पूछो कि थानवी की किताबें इस्लामी ख्वातीन पढ़ेंगी तो क्या नतीजा होगा?

पयारे इस्लामी भाइयो! आप ने तबलीग़ी जमात के बारे में खबर्दार करने वाली हदीसों को पढ़ा। तबलीग़ी जमात के मोलवियों के अकीदों को देखा। तबलीग़ी जमात के हकीमुल-उम्मत मोलवी अशरफ अली की गुस्ताखियों और बेहयाईयों का नज़ारा किया। इतने सारे सुबूत देखने के बाद आप खुद फैस्ला कर सकते हैं कि जिस काम को दीन का काम कहा जा रहा है वह दर हक़ीक़त मुसलमानों के अक़ीदे और अखलाक को तबाह करने की एक खतरनाक साज़िश है और देवबंदी तबलीग़ी जमात के बड़े बड़े उलमा और पेशवा नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताखियों की वजह से इस्लाम से खारिज हो चुके हैं। इस लिये अपने और सारे मुसलमानों का ईमान व अक़ीदा बचाने के लिये इन की हक़ीक़त बयान करना और इन से दूर रहना ज़रूरी है।

कुछ लोग इनके खिलाफ फैस्ला करने से इस लिये रुक जाते हैं कि तबलीग़ी जमात वाले बडे पक्के नमाजी हैं, उन्हें कैसे गुम्राह कहा जाए? इस का जवाब थानवी की जबानी सुनिये जिस की तालीम को आम करने के लिये मौलवी इल्यास ने तबलीग़ी जमात बनाई है। जब मोलवी अशरफ अली थानवी ने मोलवी शिबली नोमानी को काफिर कहा तो मोलवी अबदुल माजिद दर्याबादी ने अशरफ अली थानवी को खत लिखा कि: "शिबली तो बड़े नमाज़ी, परहेज़गार और तहज्जुद गुज़ार हैं।" इस पर अशरफ अली थानवी ने जवाब दिया कि: "बद-दीन आदमी अगर दीन की बातें भी करता है तो उस में

ज़ुलमत (गुमराही) लिपटी हुई होती है।" (कमालाते-अशरफिया)

दूसरा जवाब येह है कि क़ादियानी भी कलमा पढ़ते हैं, कुरआन पढ़ते हैं, नमाज़ की पाबंदी करते हैं और दुनिया भर में सब से ज़्यादा दीन की तबलीग़ का दावा करते हैं लेकिन उन के गुमराह अक़ीदे की वजह से दुनिया के सारे मुसलमान और खुद देवबंदी भी उन्हें काफिर कहते हैं। (यानी उन का ज़ाहेरी नमाज़, रोज़ा और कलमा उन्हें काफिर होने से बचा नहीं सकता।)

अगर किसी शख्स में ढेर सारी बातें इमान की हों और एक कुफ्र की तो वह काफिर ही समझा जाएगा। यही बात थानवी साहब भी कहते हैं, लिखते हैं: "फुक़हा (बड़े बड़े उलमा) का जो येह हुक्म है कि अगर किसी (की बात) में ९९ वजह कुफ्र की हों और एक वजह ईमान की हो तो ९९ वजह का एतेबार (खयाल) न किया जाएगा और उस एक वजह का एतेबार किया जाएगा। इस का मतलब लोग ग़लत समझते हैं और येह समझते हैं कि ईमान के लिये सिर्फ इमान की एक ही बात का होना भी काफी है, बाकी ९९ बातें कुफ्र की हों तब भी मुज़्य्यले-इमान (ईमान को खत्म करने वाली) न होंगी। हालांकि येह ग़लत है (और सही येह है कि) अगर किसी में एक बात भी कुफ्र की हो वह बिलइजमा (सब के नज़दीक) काफिर है।"

(अफादातुल-यौमिया, जिल्द ७, सफह ६०)

यानी खुद तबलीग़ी जमात के पेशवा ने बता दिया कि जिस शख्स में एक बात भी कुफ्र की होगी वह काफिर ही समझा जाएगा और उस के जाहिरी आमाल नहीं देखे जाएंगे।

लेहाज़ा अब आप इन्साफ के साथ फैसला करें कि तबलीगी जमात वाले जिन के अंदर एक नहीं कई बातें कुफ्र की हैं, हक़ पर हो सकते हैं? कया रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की ख़ुशी इन्के साथ जुड़ने में हो सकती है? सवाल उन लागों से है जिन्हें सिर्फ खुदा और रसूल

को राज़ी करने का जज़्बा तबलीग़ी जमात की तरफ खींच कर ले गया है। बाकी रह गए वह लोग जो किसी दुन्यावी लालच या मज़हब-दुशमनी के जज़्बे में उन के साथ हो गए हैं उन की वापसी की उम्मीद नहीं की जा सकती।

अल्लाह तआला क़ुरआने पाक में इर्शाद फरमाता है:
“तर्जुमा: ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुशमनों को दोस्त न बनाव, तुम छुप कर उन से दोस्ती करते हो और मैं जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते और जो ज़ाहिर करते हो और तुम में जो ऐसा करेगा वह ज़रूर सीधी राह से बहेका। तुमहारे रिश्ते और तुमहारे बच्चे तुमहें कुछ नफा न देंगे। क़यामत के दिन तुम में और तुमहारे पयारों में जुदाई डाल देगा कि तुम में एक दूसरे के कूछ काम न आ सकेगा और अल्लाह तुमहारे आमाल को देख रहा है।” (पारा २८, रुकू ७, सूरह अलमुम्तहिन्ना)

लेहाज़ा ऐ इस्लाम का कलमा पढ़ने वालो! ऐ खुदा व रसूल की अज़मत दिल में बसाने वालो! बेपरवाई न करो, पराए पीछे अपनी आक़ेबत न बिगाड़ो। देखो जब ईमान गया, फिर हक़ीक़त में हमेशा हमेश तक कभी किसी तरह हरगिज़ जहन्नम के सख्त अज़ाब से छुटकारा न होगा। यहां जो लोग गुस्ताखियाँ कर रहे हैं, वहाँ अपनी भुगत रहे होंगे, तूम्हें बचाने न आएंगे और आएं तो क्या कर सकते हैं? लेहाज़ा बिलकुल खालिस सच्चे इस्लामी दिल के साथ इरादा कर लो कि ऐसी जहन्नमी जमात से बिलकुल दूर रहोगे। अल्लाह तआला तमाम इस्लामी भाईयों को हक़ कुबूल करने की तौफीक़ अता फरमाए। आमीन!

गुज़ारिश: आला-हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहेमतुल्लाह अलैह फतावा रज़विया जिलद ९ में इरशाद फरमाते हैं की जब गुमराह फिरके मुसलमानों को बहेकाएं तो उनका रद करना और मुसलमानों के दिलों से उनके वसवसों को दूर करना हर फर्ज़ से अहेम फर्ज़ है। लेहाज़ा हम

पर ज़रूरी है कि अपनी हैसियत के मुताबिक इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा तकसीम करें और लोगों का ईमान बचाएं।

एलान अगर कोई वहाबी इस किताब में दिये गए हवाले की अस्ल किताब दिखाने का मुतालबा करे तो पहले उस से येह कहो कि अपने इलाक़े के सब से बड़े मुफ्ती की दस्तखत व मोहर के साथ येह लिखवा कर लाए कि येह इबारत (जिस का हवाला देखने का मुतालबा हो रहा है) वाक़ई ग़लत है (या गुस्ताखी वाली है) और येह हमारे किसी मोलवी की किताब में नहीं। अगर येह उन की किताब में पाई गई तो हम वहाबी मज़हब से तौबा कर के इमाम अहमद रज़ा का मसलक अपनाएं गे और उन का दामन थाम लेंगे।

इस सवाल का जवाब ज़रूर दीजिये

क्या आप को यह किताब (पढ़ो और फैसला करो) पसंद आई? क्या आप चाहते हैं कि आईंदा भी इस तरह की किताब छापी जाए और फैलाई जाए? अगर आप का जवाब **हां** में है तो मोबाईल में लिखें: **HAAN** और **8080430440** पर **SMS** कर दें। अगर आप जवाब के इलावा और भी कुछ लिखना चाहते हैं तो पहले जवाब के अलफाज़ लिख दें उस के बाद एक खाली जगह छोड कर अपना पैग़ाम लिखें।

इमान व अक़ीदे को मज़बूत करने वाली किताबें आधी क़ीमत में!

सफहात	किताब का नाम
48	तमहीदे-ईमान (इमाम अहमद रज़ा रहमतुल्लाह अलैह)
224	ज़लज़ला (अल्लामा अर्शदुल-क़ादरी अलैहिररहमा)
48	दावते इन्साफ (अल्लामा अर्शदुल-कादरी अलैहिररहमा)
270	जा-अल हक़ (मुफ्ती अहमद यार खान नईमी अलैहिररहमा)
32	तबलीग़ी जमात अहादीस की रौशनी में

64	मोहक़्क़िक़ाना फैसला (मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी)
40	अक़ाएदे-उल्माए-देवबंद (हुज़ूर हाफिज़े-मिल्लत अलैहिररहमा)
344	खून के आंसू (अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी अलैहिररहमा)
32	अंगूठे चूमने का मसला (मौलाना शफी ओकाड़वी)
294	अनवारुल हदीस (मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी अलैहिररहमा)
850	सच्ची हिक़ायात (मौलाना अबुन्नूर मोहम्मद बशीर)
448	जन्नती ज़ेवर (अल्लामा अबदुल मुस्तफा आज़मी अलैहिररहमा)
514	क़ानूने-शरीअत (मौलाना क़ाज़ी शमसुद्दीन अहमद)
352	इस्लामी अखलाक़ व आदाब (हुज़ूर सदरुश्शरीआ)
304	हमारे गौसे-आज़म (मौलाना शरीफ नूरी)
140	इर्शादाते-आलाहज़रत (क़ाज़ी मुफ़्ती गुलाम मुजतबा)
48	बदमज़हबों से रिशते (मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी)
80	आसारे क़यामत (हज़रत अल्लामा अखतर रज़ा अज़हरी)
228	क़रीना ए ज़िन्दगी (मौलाना मोहम्मद फारूक खाँ रज़वी)